# रंगून क्रीपर तथा कल, आज और कल के रंग बदलते फूल

किशोर पंवार

किसी मकान या बगीचे के पेड़ पर गलबहियाँ करती *क्विसकालिस इंडिका* की बेल जिसका लेटिन में अर्थ होता है 'कौन-क्या' झाड़ी, शायद आपने कई बार देखी होगी। पर अब इस बेल के झुमके की तरह लटकते फूलों को गौर से देखें। कुदरत के क्रियाकलापों का ये अद्‌भुत नज़ारा है। यह महकती हुई रंगीन बेल प्राकृतिक रूप से हमारे देश के अलावा पाकिस्तान, मलेशिया और म्यांमार (रंगून-बर्मा) के जंगलों में पेड़ों पर चढ़ी मिलती है। परन्तु इसकी सुन्दरता के चलते यह रंगून क्रीपर बाग-बगीचों और घरों की एक पसन्दीदा बेल बन चुकी है। हमारे देश में इसे संध्यारानी, माधवीलता, मधुमंजरी और मधुमालती जैसे नामों से भी पुकारा जाता है। इस सुन्दर रसभरी लता पर लिखते समय मुझे यह गाना भी बार-बार याद आ रहा है,

मेरे पिया गए रंगून,
वहाँ से किया है टेलीफोन,
तुम्हारी याद सताती है।

## शाम का नज़ारा

शाम ढलने को है, धीरे-धीरे अँधेरा फैलता जा रहा है, दबे पाँव। सूरज के स्वागत में खिले सभी फूल अपने खिड़की-दरवाज़े बन्द कर सोने की तैयारी में हैं – चाहे ऑफिस टाइम पौधा हो, जरबेरा, गुलबांस या गुड़हल।

पर मेरे घर पर दूसरी मंज़िल तक चढ़ी एक बेल पर सफेद-लाल फूलों वाले बड़े-बड़े गुच्छे हवा में होले-होले झूल रहे हैं – गहरे हरे चमकीले अण्डाकार पत्तों के बीच, जिनकी नसें भी दूर से ही नज़र आ जाती हैं। फूलों के ये गुच्छे रस और सुगन्ध से भरपूर हैं। कहते हैं कि इनकी गन्ध जौली रेंजर कैंडी (एक प्रकार की टॉफी) की याद दिलाती है।

प्रत्येक गुच्छे में लगभग 15 से 20 फूल लगे रहते हैं। इनमें से चार-पाँच फूल रोज़ शाम को ताज़ा खिलते हैं। ये फूल बहुत लम्बे होते हैं – छह से आठ सेंटीमीटर लम्बे। इनकी लम्बी पतली-सी हरी नली के ऊपर पाँच पंखुड़ियाँ लगी हुई हैं। और इस नली में ऊपर से नीचे तक ढेर सारा मकरन्द भरा हुआ है जिसकी तलाश में तरह-तरह के मेहमान इनके इर्द-गिर्द मण्डराते रहते हैं। सुबह-शाम इनका डेरा लगा रहता है, इन फूलों पर।

शाम को सफेद ताज़े फूलों पर लम्बी सूण्ड वाले पतंगे आ पहुँचते हैं। लगता है जैसे इनकी 10 से 12 सेंटीमीटर लम्बी सूण्ड फूलों की नली की लम्बाई से प्रतिस्पर्धा कर रही हो। ये पतंगे स्ट्रॉ जैसी अपनी सुण्डी नली में डालकर उनमें भरा मीठा मकरन्द उड़ते-उड़ते ही पीते रहते हैं।

## सुबह का आलम

अब रात ढल चुकी है और सुबह होने को है। जो फूल रात के समय सफेद थे, वे अब सूरज की रोशनी में अपना रंग बदलने लगे हैं। देखते-देखते ही ये फूल गुलाबी और शाम होते-होते लाल हो जाते हैं। अब इनके मेहमान भी बदल जाते हैं। दिन में रंगीन तितलियाँ और शक्करखोरे इनका रस पीने के लिए आ पहुँचते हैं। तीसरा दिन होते-होते ये फूल सफेद और लाल से गहरे मरून रंग के हो जाते हैं। पतंगे हों या तितलियाँ या फिर शक्करखोरे, मीठा मधु पीने के साथ-साथ इनका पराग भी इधर-से-उधर करते रहते हैं जिससे इन बेलों पर परागण की वजह से फल बनते हैं। मधुमालती के ये फूल न सिर्फ अपना रंग बदलते हैं बल्कि समय के साथ इनकी स्थिति भी बदलती है। पहले दिन, क्षितिज में उग रहे चन्द्रमा को निहारते उसी की तरह सफेद, और दूसरे दिन नीचे ज़मीन की ओर हल्के झुके, अपनी जड़ों को धन्यवाद देते जो इन्हें पानी पिलाती रहती हैं।

फूलों का यह रंग-रूप और स्थिति में परिवर्तन, इसके परागकणों को बिखराने वाले तरह-तरह के कीट-पतंगों और पक्षियों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए होता है, ऐसा कई जानकार कहते हैं। कुछ भी हो, यह रंगबाज़ फूल कैसे भी हों, किसी-न-किसी तरह अपना परागण करवा ही लेते हैं। चाँदनी रात हो या दिन का उजाला, इन फूलों के गुच्छे लगते

बड़े सुन्दर और सजीले हैं। इस बेल का रंगीन जादू एक बार देख लेने के बाद आपको भी बार-बार इसकी याद ज़रूर आएगी।

## एक और अचम्भा - टुडे टुमॉरो टुगेदर

रंगून क्रीपर की रंगीनियाँ देखने के बाद, आइए, अब एक और रंगबाज़ फूल की बात कर लें। इसे भी विभिन्न नामों से जाना जाता है - टुडे टुमॉरो टुगेदर, मॉर्निंग नून एण्ड नाइट, किस मी क्विक और ब्राज़ील रेनट्री। इसके इतने सारे नाम से यह तो पता चल ही जाता है कि यह कोई खास किस्म का ही पौधा होगा। दरअसल, यह एक सुन्दर झाड़ी है जो मुख्य रूप से ब्राज़ील में पाई जाती है। वनस्पति-शास्त्री इसे *ब्रुनफेल्सिया पासीफ्लोरा* के नाम से जानते हैं। इसका नाम सोलहवीं सदी के जर्मन सन्त ओटोब्रुन फाइल्स की याद में रखा गया है। इसका प्रजातिगत नाम 'पासीफ्लोरा' एक लैटिन शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ होता है 'कुछ ही फूलों वाली'। यह झाड़ी लगभग ढाई मीटर तक ऊँची और डेढ़ मीटर तक चौड़ी होती है। इसमें लगभग 16 सेंटीमीटर लम्बी गहरी हरी पत्तियाँ समूहों में लगी रहती हैं।

फूल भी समूह में खिलते हैं, एक समूह में लगभग दस तक। प्रत्येक फूल लगभग पाँच सेंटीमीटर लम्बा होता है जो खिलते समय बैंगनी रंग का होता है और जिसका केन्द्रीय भाग सफेद रंग की एक सुन्दर रचना से बना होता है। दूसरे दिन यह हल्के बैंगनी रंग में बदल जाता है और फिर तीसरे दिन सफेद हो जाता है। फूलों के ये तीनों रूप एकसाथ देखे जा सकते हैं। फूलों की पंखुड़ियाँ 11 से 25 मि.मी. लम्बी होती हैं।

फूलों में प्रतिदिन होने वाले रंग परिवर्तन के बारे में जानकर अब तो आप समझ ही गए होंगे कि इसे 'टुडे टुमॉरो टुगेदर' या 'मॉर्निंग नून एण्ड नाइट' नाम क्यों दिए गए हैं! दरअसल, फूलों की स्थितियाँ दर्शाती हैं कि कौन-सा फूल कब खिला है। सफेद फूल परसों से खिला हुआ है, हल्का बैंगनी कल का है और आज का ताज़ा फूल गहरे बैंगनी रंग का है। ये फूल प्रतिदिन रंग बदलते हैं जिन्हें देखकर हम यह पता लगा सकते हैं कि कौन-से फूल की उम्र कितनी है। है न मज़ेदार इन फूलों का मिज़ाज!

---

**किशोर पंवार:** शासकीय होल्कर विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर में बीज तकनीकी विभाग के विभागाध्यक्ष और वनस्पतिशास्त्र के प्राध्यापक रहने के बाद सेवानिवृत्त। 'होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम' से लम्बा जुड़ाव रहा है जिसके तहत *बाल वैज्ञानिक* के अध्यायों का लेखन और प्रशिक्षण देने का कार्य किया है। *एकलव्य* द्वारा जीवों के क्रियाकलापों पर आपकी तीन किताबें प्रकाशित। शौकिया फोटोग्राफर, लोक भाषा में विज्ञान लेखन व विज्ञान शिक्षण में रुचि।